॥ श्रीमद्भगवद्गीता शुद्ध उच्चारण मार्गदर्शिका - स्तर 4 ॥

माहेश्वर सूत्र

1. अइउण्।
2. ऋऌक्।
3. एओङ्।
4. ऐऔच्।
5. हयवरट्।
6. लण्।
7. ञमङणनम्।
8. झभञ्।
9. घढधष्।
10. जबगडदश्।
11. खफछठथचटतव्।
12. कपय्।
13. शषसर्।
14. हल्।

'प्रत्याहार' - शब्दों के निर्वचन या नियमों मे जब भी किन्हीं विशेष वर्ण समूहों के प्रयोग की आवश्यकता होती है, तब उन वर्णों को माहेश्वर सूत्रों से प्रत्याहार बनाकर संक्षेप मे ग्रहण करते हैं। प्रत्याहार का अर्थ होता है – संक्षिप्त कथन। आदि वर्ण और अन्तिम वर्ण को मिलाकर प्रत्याहार बनाता है |

उदा. = 'अच्' प्रत्याहार - प्रथम माहेश्वर सूत्र 'अइउण्' के आदि वर्ण 'अ' को चतुर्थ सूत्र 'ऐऔच्' के अन्तिम वर्ण 'च्' से योग कराने पर 'अच्' प्रत्याहार बनता है। अतः 'अच्' प्रत्याहार से 'अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ' इन वर्णों का ग्रहण होगा।

सन्धि-नियम

दो वर्णों के एकत्र आने पर सन्धि होती है। यदि एकत्र आने वाले वर्ण स्वर हैं तो वह सन्धि स्वरसन्धि, व्यञ्जन हैं तो व्यञ्जन सन्धि, अनुस्वार है तो अनुस्वार सन्धि और विसर्ग है तो विसर्गसन्धि होती है। सन्धि होने पर एकत्र आने वाले वर्णों में से किसी एक या कई बार दोनों वर्णों पर परिवर्तन हो जाता है।

व्यञ्जन या हल् सन्धि –

व्यञ्जन का व्यञ्जन से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। व्यञ्जन सन्धि को संस्कृत में हल् सन्धि भी कहते हैं। इसके कई प्रकार हैं –

1. श्चुत्व सन्धि –

- **स्तोः श्चुना श्चुः -** सकार, तवर्ग का शकार, चवर्ग के साथ संयोग होने पर सकार, तवर्ग के स्थान पर क्रमशः परिवर्तन से शकार, चवर्ग हो जाते हैं। संयोग में सकार, तवर्ग और शकार, चवर्ग के वर्णों का क्रम आगे पीछे हो सकता है लेकिन परिवर्तन केवल सकार और तवर्ग के स्थान पर ही होगा।

  उदा. – मनस्+चञ्चलम्=मनश्चञ्चलम्(6/26), युन्+जीत=युञ्जीत(6/10), यद्+ज्ञात्वा=यज्ज्ञात्वा(4/16)

एकत्र आने वाले दो व्यंजन		स् और तवर्ग का परवर्तित रूप
स्	श्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	श्
त्		च्
थ्		छ्
द्		ज्
ध्		झ्
न्		ञ्

(नोट - क्ष = क् + ष, त्र = त् + र तथा ज्ञ = ज् + ञ होते हैं, अतः इनमें क्रमशः क्, त् एवं ज् से सम्बन्धित नियम ही लागू होते हैं।)

2. ष्टुत्व सन्धि –

- **ष्टुना ष्टुः -** सकार अथवा तवर्ग का षकार अथवा टवर्ग के साथ संयोग होने पर सकार और तवर्ग के स्थान पर क्रमशः परिवर्तन से षकार और टवर्ग हो जाते हैं। संयोग में सकार, तवर्ग और षकार, टवर्ग के वर्णों का क्रम आगे पीछे हो सकता है लेकिन परिवर्तन केवल सकार और तवर्ग के स्थान पर ही होगा|

  उदा. - दृष् + तः = दृष्टः (2/16), सृष्+त्वा= सृष्ट्वा(3/10), प्रनष्+तः=प्रनष्टः(18/72)

एकत्र आने वाले दो व्यंजन		परवर्तित रूप
स्	ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	ष्
त्		ट्
थ्		ठ्
द्		ड्
ध्		ढ्
न्		ण्

3. चर्त्व सन्धि –

- **खरि च –** वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण एवं श, ष, स(खर्/कठोर व्यंजन) परे हों तो वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श, ष, स, ह (झल्) का परिवर्तन क, च, ट, त, प, श, ष, स('चर्') में हो जाता हैं।

  उदा. - हृद् + स्थम् = हृत्स्थम् (4/42), तद्+कुरुष्व = तत्कुरुष्व(9/27), छिद्+त्वा=छित्त्वा(4/42)

- **वाऽवसाने –** अवसान में (अर्थात् पद के अन्त में) वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श, ष, स, ह(झल्) को विकल्प से क, च, ट, त, प, श, ष, स(चर्) हो जाता है।

  उदा. - सुहृद् = सुहृत् (9/18), वाग्=वाक्, उपनिषद्=उपनिषत्, भगवद्=भगवत्

4. जश्त्व सन्धि –

- **झलां जश् झशि -** पाँचों वर्गों का प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण किसी भी मृदुव्यञ्जन अथवा स्वर के पूर्व आता है तो वह उसीके वर्गके तृतीय वर्ण(ग्, ज्, ड्, द्, ब्) में परिवर्तित हो जाता है।

  उदा.- लभ्+ध्वा = लब्+ध्वा = लब्ध्वा (4/39), बोध्+धव्यम्=बोद्+धव्यम्= बोद्धव्यम्(4/17), युध् + ध = युद्ध (2/37)

5. धत्व सन्धि –

- **झषस्तथोर्धोऽधः -** वर्गों के चतुर्थ वर्ण से परे यदि त् या थ् आते हैं तो वे धकार में परिवर्तित होते हैं। (इस सन्धि के पश्चात् जश्त्व सन्धि होने से पूर्ववर्ण उसके तृतीय वर्ण में परिवर्तित हो जात है।)

पूर्ववर्ण	उत्तरवर्ण	परिवर्तित रूप
घ्	त्/थ्	ग्ध्
झ्		ज्ध्
द्		ड्ध्
ध्		द्ध्
भ्		ब्ध्

उदा. - बोध् + तव्यम् = बोद् + धव्यम् = बोद्धव्यम् (4/17), रुध्+त्वा= रुद्+ध्वा=रुद्ध्वा(4/29)

6. षत्व सन्धि –

- **व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः -** व्रश्च आदि सप्त धातुओं के और छकारान्त एवं शकारान्त धातुओं के अंतिम वर्ण के स्थान पर 'षकार' आदेश होता है पद के अन्त में होने पर अथवा 'झल्' परे रहने पर।

  उदा.- दृश् धातु से दृष् एवं दृष्टि इसी सूत्र के अनुसार बनते हैं।
- **आदेशप्रत्यययोः -** यदि किसी पूर्व आदेश के कारण 'स्' हुआ हो या प्रत्यय में 'स्' हो तथा उससे पूर्व 'इण्' (इ, उ) या 'कवर्ग' हों तो 'सकार' का 'षकार' हो जाता है।

  उदा. - भोक् + स्यसे = भोक् + ष्यसे = भोक्ष्यसे (2/37), हनि+स्ये=हनि+ष्ये=हनिष्ये(16/14)

7. कत्व सन्धि –

- **षढोः कः सि –** 'ष' और 'ढ' को 'क' हो जाता है 'स' परे रहने पर।

  उदा. – विनंष् + स्यसि = विनंक् + ष्यसि(कत्व) = विनङ्क् + ष्यसि(षत्व) = विनङ्क्ष्यसि (18/58)

8. कुत्व सन्धि –

- **चोः कुः** - पद के अन्त में विद्यमान चवर्ग का कोई भी वर्ण उसके सामने अन्तःस्थ और अनुनासिक छोड़ कोई भी वर्ण हो अथवा कुछ भी ना हो तो क्रमशः क वर्ग में परिवर्तित हो जात है।

पूर्ववर्ण	उत्तरवर्ण	परिवर्तित रूप
च्	प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण, श, ष, स, ह, अवसान	क्
छ्		ख्
ज्		ग्
झ्		घ्

उदा. - मुच् + तः = मुक्तः (5/28)

9. तुगागम सन्धि –

- **छे च –** ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' होने पर छकार से पूर्व 'त्' का आगम होता है और तत्पश्चात् श्चुत्व सन्धि से चकार में परिवर्तित हो जाता है।

  उदा. - कृष्ण + छेत्तुम् = कृष्ण +त्+ छेत्तुम् = कृष्ण +च्+ छेत्तुम् = कृष्णच्छेत्तुम् (6/39)

- **पदान्ताद्वा –** पदान्त के दीर्घ स्वर के बाद 'छ' होने पर भी 'त्' का आगम विकल्प से होता है।

  उदा. - गायत्री + छन्दसाम् = गायत्रीच्छन्दसाम् अथवा गायत्री छन्दसाम् (10/35)

10. ङमुडागम सन्धि –

- **ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् –** किसी भी ह्रस्व के बाद यदि ङ्, ण्, या न् हो और उसके पश्चात् कोई भी स्वर हो तो ङ्, ण्, और न् का क्रमशः द्वित्व हो जाता है।

  उदा. - कुर्वन् + अपि = कुर्वन्नपि(5/7), सन्+अव्ययात्मा= सन्नव्ययात्मा(4/6), प्रहसन्+इव=प्रहसन्निव(2/10)

11. रुत्व सन्धि

- **नश्छव्यप्रशान् –** पदान्त 'नकार' के पश्चात् यदि च्, छ्, ट्, ठ्, त् अथवा थ् ये वर्ण आते हैं और उसके बाद कोई भी स्वर, ह्, य्, व्, र्, ल्, ङ्, ञ्, ण्, न् हो तो नकार स्, श्, ष् में बदलता है और उसके पूर्ववर्णपर अनुस्वार दिया जाता है। (नकार+ त्, थ् = सकार, नकार+ च्, छ्=शकार, नकार+ ट्, ठ्=षकार

  उदा. - विद्वान् + तथा = विद्वांस् + तथा = विद्वांस्तथा (3/25), गतासून्+च= गतासूंश्च(2/11), प्रज्ञावादान्+च=प्रज्ञावादांश्च(2/11)

12. अनुस्वार सन्धि

- **मोऽनुस्वारः -** पद के अन्त में 'मकार' का अनुस्वार हो जाता है, यदि उसके पश्चात् कोई व्यञ्जन आता हो।

  उदा. - हर्षम्+कुरुवृद्धः = हर्षं कुरुवृद्धः(1/12), शङ्खम्+दध्मौ= शङ्खं दध्मौ(1/12)

- **नश्चापदान्तस्य झलि –** अपदान्त 'नकार' और 'मकार' का अनुस्वार में परिवर्तन होता है, वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श, ष, स, ह ('झल') परे होने पर।

  उदा. - वासान् + सि = वासांसि (2/22)

13. अनुनासिक सन्धि

- **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा –** पाँचों वर्ग के पहले चार व्यञ्जनों में से कोई भी व्यञ्जन यदि पदान्त में हो और उसके पश्चात् कोई भी अनुनासिक व्यञ्जन आता है तो वह व्यञ्जन उसी के वर्ग के अनुनासिक में परिवर्तित हो जाता है।

  उदा. - वाक्+मनोभिर्यत् = वाङ्मनोभिर्यत् (18/15), षट्+मासाः = षण्मासा (8/24), जगत्+निवास = जगन्निवास (11/37)

पूर्ववर्ण	उत्तरवर्ण	प्रथम वर्ण के स्थान पर परिवर्तन
क वर्ग	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	ङ्
च वर्ग		ञ्
ट वर्ग		ण्
त वर्ग		न्
प वर्ग		म्

14. परसवर्ण सन्धि

- **अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः -** अनुस्वार से परे यदि किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आता है तो वह अनुस्वार अग्रिम व्यञ्जन के वर्गकि अनुनासिक में परिवर्तित हो जाता है।

  उदा. – सं + मूढः = सम्मूढः (5/20), युं + जन् = युञ्जन् (6/28)

- **वा पदान्तस्य –** ऊपर निर्दिष्ट नियम पदान्त-अनुस्वार के विषय में वैकल्पिक है अर्थात् पदान्त के अनुस्वार का अनुनासिक में परिवर्तन विकल्प से होता है।

  उदा. = मां + पश्यति = मां पश्यति/माम्पश्यति (3/30)

- **तोर्लि –** 'तवर्ग' को 'लकार' परे होने पर परसवर्ण होता है।

  उदा. - श्रुतिमत् + लोके = श्रुतिमल्लोके (13/13), श्रद्धावान् + लभते = श्रद्धावाँल्लभते (4/39)

15. पूर्वसवर्ण सन्धि

- **झयो होऽन्यतरस्याम् –** पाँचों वर्ग के प्रथम चार व्यञ्जनों से परे यदि हकार आता है तो वह हकार पूर्वव्यञ्जन के वर्ग के चतुर्थ व्यञ्जन में परिवर्तित हो जाता है। यह नियम वैकल्पिक है।

प्रथम वर्ण	द्वितीय वर्ण	द्वितीय वर्ण के स्थान पर परिवर्तन
क वर्ग	ह्	घ्
च वर्ग		झ्
ट वर्ग		ढ्
त वर्ग		ध्
प वर्ग		भ्

  उदा. - एतद् + हि = एतद्धि (6/42)

- **शश्छोटी –** पाँचों वर्गों के प्रथम चार व्यञ्जनों में से किसी भी व्यञ्जन के के बाद यदि शकार आता है और उसके बाद कोई भी स्वर या ह, य, व, र ये वर्ण आयें तो शकार छकार में परिवर्तित हो जाता है। यह नियम वैकल्पिक है।

  उदा. - एतच् + श्रुत्वा = एतच्छ्रुत्वा (11/35), तस्मात् + शास्त्रम् = तस्माच्छास्त्रम् (16/24)

॥ द्वित्व(आघात) नियम॥

द्वित्वादि नियमों का पालन भगवद्गीता की दृष्टि से जितना उपयोगी है उस दृष्टि से उच्चारण को और अधिक उत्तम एवं सरल बनाने हेतु जो नियम स्वीकार किये गये हैं वह निम्नलिखित हैं -

मूल द्वित्व नियम - अनचि च, स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र।

स्वर के बाद संयुक्त वर्ण आने पर संयुक्त वर्ण में प्रथम वर्ण का द्वित्व पाणिनीय व्याकरण के 'अनचि च' सूत्र से एवं पाणिनीयशिक्षा के 'स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र' सूत्र से होता है। यह उत्सर्ग नियम हैं जो अपवाद छोड़कर सभी स्थानों पर प्रयुक्त हो जाता है। ***पाणिनीयशिक्षा***

इस नियम के कुछ अपवाद नियम हैं जो कि इस प्रकार हैं।

1. परं तु रेफहकाराभ्याम्।

संयुक्त वर्ण में यदि प्रथम वर्ण रेफ अथवा हकार है तो द्वित्व नहीं होता है। ***पाणिनीयशिक्षा***

उदा. – पर्युपासते, गुह्यतमम्

2. (न) सवर्णे।

यदि संयुक्त वर्ण में दोनों वर्ण समान हैं तब वहाँ स्वाभाविक रूप से ही द्वित्व होता है इसीलिये वहाँ अतिरिक्त द्वित्व की आवश्यकता नहीं होती। **प्रातिशाख्य**

उदा. – उत्सन्न, मय्यावेश्य

3. जब संयुक्त वर्ण में तीन व्यञ्जनों का संयोग हो। ***पाणिनीय शिक्षा***

उदा. – कृत्स्नम्, भक्त्या

4. प्रथमैर्द्वितीयास्तृतीयैश्चतुर्थाः।

संयुक्त वर्ण में पांचो वर्ग के सभी वर्णों(स्पर्श वर्णों) का द्वित्व करने में द्वितीय वर्ण से पहले प्रथम वर्ण का और चतुर्थ वर्ण से पहले तृतीय वर्ण का प्रयोग किया जाता है। ***पाणिनीय शिक्षा***

उदा. – जिघ्रन् = जि(ग्)घ्रन्

शब्दावली

- **आदेश –** किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण शत्रु की भांति उसके स्थान पर आ बैठता है तब वह आदेश कहलाता है। उदा. – 'यदि+अपि = यद्यपि' यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' का आदेश हुआ है। (शत्रुवदादेशः)
- **आगम –** किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्र की भांति पास आकर बैठकर उससे संयुक्त हो जाता है तब वह आगम कहलाता है। उदा. – 'कृष्ण+छेत्तुम्'=कृष्णच्छेत्तुम् यहाँ कृष्ण के ण एवं छेत्तुम् के छ के मध्य च् का आगम हुआ है। (मित्रवदागमः)
- **लोप –** दो वर्णों की संधि के दौरान किसी वर्ण को हटा देने की प्रक्रिया को लोप कहते हैं।
- **प्रकृतिभाव –** यदि दो वर्णों की संधि के दौरान आदेश, आगम या लोप की स्थिति नहीं हो, पदों की पूर्ववत ही स्थिति रहे तो उसे प्रकृतिभाव कहते हैं।
- **प्रत्यय –** जिन वर्ण या वर्ण समुदायों का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता वे किसी शब्द के पश्चात् लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय कहलाते हैं। प्रत्यय पांच प्रकार के होते हैं – सुप्, तिङ्, कृत्, तद्धित, स्त्री प्रत्यय।
- **उपसर्ग –** ऐसे शब्द जो किसी धातु के पूर्व जुड़ कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या उसी अर्थ की पुष्टि करते है उपसर्ग कहलाते हैं। उदा. – हार शब्द का अर्थ है पराजय उसके साथ विभिन्न उपसर्ग जोड़कर अनेक अलग

अलग अर्थ के शब्द सिद्ध होते हैं –

1. प्र + हार = प्रहार, 2. सम् + हार = संहार(विनाश), 3. वि + हार = विहार(घूमना)

संस्कृत में कुल 22 उपसर्ग हैं - प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

- **कठोर-मृदु व्यंजन व अनुनासिक –**

कठोर व्यंजन		मृदु व्यंजन		अनुनासिक
क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त्	थ्	द्	ध्	न्
प्	फ्	ब्	भ्	म्
श्, ष्, स्		य्, र्, ल्, व्, ह्		'यँ', 'लँ', 'वँ'

सामान्य संस्कृत

संस्कृत में कारक एवं क्रिया के परिचय से सामान्य वाक्यों की रचना की जा सकती है। संस्कृत में वाक्य बनाने हेतु सर्वप्रथम क्रिया (कोई भी कार्य) देखते हैं। इसे धातुरूप के माध्यम से व्यक्त करते हैं। धातुरूप का प्रयोग क्रिया करने वाले व्यक्तियों की संख्या और पुरुष के अनुसार होता है।

संस्कृत में 6 कारक होते हैं। **कर्ता** (क्रिया करने वाला) कौन है, तत्पश्चात् **कर्म** (कर्ता को क्रिया के लिये क्या इष्ट है), **करण** (जिससे किया जा रहा है), **सम्प्रदान** (जिसको कुछ दिया जा रहा है), **अपादान** (विभाग होने कि क्रिया में जो स्थिर है), **अधिकरण** (वह क्रिया जिस स्थान पर हो रही है। प्रत्येक शब्द को उसके कारक के अनुसार विभक्ति दी जाति है। वाक्यरचना के हेतु से कुछ आधारभूत नियम यहाँ दिये जा रहे हैं –

संस्कृत में लिंगों के आधार पर शब्दों का विभाजन होता है – शब्दों के रूप, उनके लिंग और अंतिम वर्ण के आधार पर परिवर्तित होते हैं। राम, श्याम, अनुराग आदि शब्दों के रूप एकसमान होंगे। वैसे ही मति, गति, रति के एक सामान एवं जगत्, मनस् आदि शब्दों के एकसमान होंगे। पुल्लिंग राम शब्द को एवं कुछ सामान्य धातुओं को लेकर हम कुछ उदाहरण देखेंगे।

'अकारान्त पुल्लिँङ्ग राम शब्द'

विभक्ति	कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्ता	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	कर्म	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	करण	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	सम्प्रदान	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	अपादान	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	सम्बन्ध	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	अधिकरण	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

कुछ प्रसिद्ध धातुयें :

1. गच्छति – जाता है।
2. क्रीडति – खेलता है।
3. खादति – खाता है।
4. पठति – पढ़ता है।
5. वदति – बोलता है।
6. चलति – चलता है।

सभी धातुओं के संकेत रूप में **'पठ्' धातु के लट् लकार** (वर्तमान काल की क्रिया) के रूप दिये जा रहे हैं -

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:

संस्कृत में क्रियापद के रूप तीन पुरुषों (प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष) के अनुसार होते हैं | किसी दूसरे के लिये प्रथम पुरुष, तुम के प्रयोग हेतु मध्यम पुरुष, स्वयं के लिये उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है। इन नियमों को ध्यान में रखकर कुछ वाक्य उदाहरण रूप में प्रस्तुत हैं :

1. राम: गच्छति। 1. राम: पश्यति। 1. राम: पठति। 1. राम: वदति।

2. त्वं गच्छसि। 2. त्वं पश्यसि। 2. त्वं पठसि। 2. त्वं वदसि।

3. अहं गच्छामि। 3. अहं पश्यामि। 3. अहं पठामि। 3. अहं वदामि।

सभी विभक्तियों के कुछ उदाहरण :

1. राम: गच्छति (**राम** जाता है)। - राम: (प्रथमा - कर्ता)
2. राम: ग्रामं गच्छति (राम **गाँव को** जाता है)। - ग्रामं (द्वितीया - कर्म)
3. राम: कलमेन लिखति (राम **कलम से** लिखता है)। - कलमेन (तृतीया - करण)
4. राम: कृष्णाय फलं ददाति (राम **कृष्ण को** फल देता है)। - कृष्णाय (चतुर्थी - सम्प्रदान)
5. राम: ग्रामात् आगच्छति (राम **गाँव से** आता है)। - ग्रामात् (पञ्चमी - अपादान)
6. रामस्य पुत्र: कुश: (**राम का** पुत्र कुश है)। - रामस्य (षष्ठी - सम्बन्ध) (सम्बन्ध कारकों में नही आता।)
7. राम: विद्यालये पठति (राम **विद्यालय में** पढ़ता है)। - विद्यालये (सप्तमी - अधिकरण)

|| इति ||

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।
अनुमति हेतु पूर्ण प्रयोजन **consent@learngeeta.com** *पर हमें लिखें।*